प्रश्नः आधुनिक युग में पूंजीवाद की प्रासंगिकता क्या है?

आधुनिक विश्व व्यवस्था में पूँजीवाद (Capitalism) केवल एक आर्थिक प्रणाली नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक और राजनीतिक दर्शन बन चुका है। सोवियत संघ के पतन और शीत युद्ध की समाप्ति के बाद फ्रांसिस फुकुयामा ने इसे 'इतिहास का अंत' (The End of History) कहा था, जिसका अर्थ था कि उदारवादी पूँजीवाद ही अंतिम और श्रेष्ठ विकल्प है।

आधुनिक युग में पूँजीवाद की प्रासंगिकता को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. नवाचार और तकनीकी प्रगति (Innovation and Technology)

पूँजीवाद का सबसे सशक्त पक्ष 'प्रतिस्पर्धा' है। आधुनिक युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), अंतरिक्ष अन्वेषण (जैसे SpaceX) और हरित ऊर्जा के क्षेत्र में जो क्रांतिकारी बदलाव आ रहे हैं, उनके पीछे पूँजीवादी लाभ की प्रेरणा और निजी निवेश की बड़ी भूमिका है। जोसेफ शुम्पीटर (Joseph Schumpeter) ने इसे **'सृजनात्मक विनाश' (Creative Destruction)** कहा था—अर्थात पुरानी तकनीक को नई और बेहतर तकनीक से बदलना, जो आज भी प्रासंगिक है।

2. गरीबी उन्मूलन और वैश्विक व्यापार

पूँजीवादी विकास मॉडल ने चीन और भारत जैसे देशों में करोड़ों लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकालने में मदद की है। 'मुक्त बाजार' (Free Market) और 'वैश्विक मूल्य श्रृंखला' (Global Value Chains) ने विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं को एक-दूसरे पर निर्भर बना दिया है, जिससे वैश्विक उत्पादन क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

3. उपभोक्तावाद और व्यक्तिगत स्वतंत्रता

पूँजीवाद व्यक्ति की 'पसंद की स्वतंत्रता' (Freedom of Choice) पर आधारित है। बाजार में उत्पादों की विविधता उपभोक्ताओं को शक्ति प्रदान करती है। एडम स्मिथ के **'अदृश्य हाथ' (Invisible Hand)** का सिद्धांत आज भी यह तर्क देता है कि जब व्यक्ति अपने स्वार्थ (लाभ) के लिए कार्य करता है, तो अनजाने में वह समाज के आर्थिक कल्याण में भी योगदान देता है।

4. पूँजीवाद का बदलता स्वरूप: कल्याणकारी राज्य (Welfare State)

21वीं सदी में शुद्ध पूँजीवाद (Laissez-faire) के बजाय 'मिश्रित पूँजीवाद' अधिक प्रासंगिक हो गया है। आज दुनिया के अधिकांश देश (जैसे स्कैंडिनेवियन देश) पूँजीवाद की कुशलता और राज्य के कल्याणकारी कार्यों के बीच संतुलन बना रहे हैं। इसे 'हितधारक पूँजीवाद' (Stakeholder Capitalism) भी कहा जा रहा है, जहाँ कंपनी केवल शेयरधारकों के लाभ के

लिए नहीं, बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए भी जिम्मेदार मानी जाती है।

चुनौतियाँ और आलोचनात्मक विश्लेषण

पूँजीवाद की प्रासंगिकता पर सवाल तब उठते हैं जब हम इसकी सीमाओं को देखते हैं:

- **बढ़ती असमानता:** थॉमस पिकेटी (Thomas Piketty) ने अपनी पुस्तक 'Capital in the Twenty-First Century' में तर्क दिया है कि पूँजी पर मिलने वाला लाभ, आर्थिक विकास की दर से अधिक होता है, जिससे अमीर और गरीब के बीच की खाई लगातार बढ़ती जा रही है।
- **पर्यावरणीय संकट:** पूँजीवाद का 'असीमित विकास' का लक्ष्य पृथ्वी के सीमित संसाधनों के साथ मेल नहीं खाता, जिससे जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर समस्या उत्पन्न हुई है।
- **बाजार की विफलता (Market Failure):** 2008 की वैश्विक मंदी ने यह सिद्ध किया कि बिना सरकारी विनियमन (Regulation) के पूँजीवाद विनाशकारी हो सकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, पूँजीवाद की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है, बल्कि यह समय के साथ स्वयं को ढाल (Adapt) रहा है। आधुनिक युग में 'अंधाधुंध पूँजीवाद' के स्थान पर एक ऐसे **'मानवीय पूँजीवाद'** की आवश्यकता है जो आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय स्थिरता को भी प्राथमिकता दे। यह प्रणाली आज भी उत्पादन का सबसे कुशल तरीका है, लेकिन इसके वितरण पक्ष में सुधार की भारी आवश्यकता है।